पुस्तक परिक्रमा– क्रमांक 2

गोसेवा ही राष्ट्रसेवा है

पुस्तक : गोरक्षा–राष्ट्र रक्षा, गोसेवा–जनसेवा
लेखक : श्री गौरीशंकर भारद्वाज
प्रकाशक : सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवाला नई दिल्ली–55
कीमत : 38.00 रू0

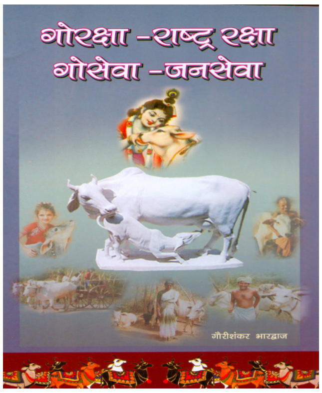

राष्ट्रवादी विचारक श्री गौरीशंकर भारद्वाज द्वारा लिखित यह पुस्तक हमारे राष्ट्रीय सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतीक मातृस्वरुपा गाय पर केन्द्रित है। जिसमें गोवंश के संरक्षण, संवर्धन और गोसेवा के विभिन्न आयामों पर विस्तृत रूप से शास्त्रसम्मत एवं युगानुकूल व्याख्या की गयी है। पुस्तक में गोरक्षा को राष्ट्र रक्षा से जोड़कर गाय की महत्ता को निरुपित किया गया है। इसमें विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं व सरकारी तौर पर चलाये जा रहे गोरक्षा कार्यों का वर्णन और राष्ट्रीय गोवंश आयोग द्वारा गोसंरक्षण के लिए पारित की गयी सिफारिशें प्रमुखता से प्रकाशित हैं।

पुस्तक की प्रमुख विशेषता गोवंश को स्वास्थ्य रक्षा, चिकित्सा और ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था से जोड़कर प्रस्तुत किया जाना है, जिनमें 'पंचगव्य'(गाय का दूध, दही, घृत, मूत्र और गोबर) के लाभकारी गुणों का वर्णन है। इसके अलावा इस पुस्तक में भारतीय गोवंश की प्रमुख प्रजातियों और गोसेवी संस्थाओं (गोशाला, भारतीय गोबैंक, पंचगव्य अमृत केन्द्र) का भी संक्षेप में विवरण दिया गया है।

सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित इस प्रेरणादायी पुस्तक की प्रस्तावना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली प्रान्त के संघचालक श्री रमेश प्रकाश ने लिखी है। पचहत्तर पृष्ठों वाली इस पुस्तक की कीमत अड़तीस रुपये है।

ISBN: 81-89622-54-4